

2025

**HINDI — HONOURS**

**Paper : DSE-B-3**

**(Hindi Sant Kavya)**

**Full Marks : 65**

*The figures in the margin indicate full marks.*

*Candidates are required to give their answers in their own words  
as far as practicable.*

**(हिन्दी संत काव्य)**

1. निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

2×10

(क) “यह संसार कागज की पुड़िया,  
बुंद पड़े धुल जाना है”

—उक्त अंश किस संत कवि का कथन है? उनके गुरु का नाम लिखिए।

(ख) संत दादू दयाल के दो शिष्यों के नाम लिखिए।

(ग) ‘अजहूँ न निकसे प्राण कठोर’

—किस संत कवि का कथन है? उनके किसी एक ग्रंथ का नाम लिखिए।

(घ) किस संत कवि का जन्म अयोध्या में हुआ था? उनके गुरु का क्या नाम था?

(ङ) ‘मेरा मेरा छोड़ गँवारा’— कौन किससे कहता है?

(च) आधुनिक राजस्थान के दौसा में किस संत कवि का जन्म हुआ था? उनके गुरु कौन थे?

(छ) “मन चंगा तो कठौती में गंगा”— किस संत कवि का कथन है? वे किस व्यवसाय से जुड़े हुए थे?

(ज) कबीर की भाषा क्या है? उनकी वाणी के संग्रह का नाम लिखिए।

(झ) निम्नलिखित अंश किस संत कवि की रचना है—

(अ) ‘कौन ठगवा नगरिया लूटल हो’।

(आ) ‘ईस बटाउ प्राण पयाना’।

(झ) सुंदरदास (छोटे) रचित किन्हीं दो रचनाओं के नाम लिखिए।

**Please Turn Over**

**(2229)**

2. किन्हीं तीन आलोचनात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

10×3

- (क) संत सुंदरदास की भक्ति चेतना पर प्रकाश डालिए।
- (ख) संत कबीर की सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिए।
- (ग) सुंदरदास (छोटे) की भक्ति चेतना पर प्रकाश डालिए।
- (घ) पाठ्यक्रम में निर्धारित संत कवियों की गुरु संबंधी अवधारणा पर प्रकाश डालिए।
- (ङ) संत जम्भनाथ की काव्यगत विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

5×3

- (क) भगति ऐसी सुनहु रे भाई।  
आई भगति तब गई बड़ाई॥ टेक॥  
कहा भयौ नाचैं अरु गायैं, कहाँ भयौ तप कीन्हें।  
कहा भयौ जे चरन पखालै, जो परम तत नहीं चीन्हें॥  
कहा भयौ जू मूँड मुड़ायौ, बहु तीरथ व्रत कीन्हें।  
स्वामी दास भगत अरु सेवग, जो परम तत नहीं चीन्हें॥
- (ख) जागि रे सब रैण बिहारी।  
जाइ जनम अँजुलीकी पाणी॥  
घड़ी घड़ी घड़ियाल बजावै।  
जो दिन जाइ सो बहुरि न आवै॥  
सूरज-चंद कहै समुझाइ।  
दिन-दिन आव घटती जाइ॥
- (ग) राम सो धन ताको कहा अब थोरौ।  
अठ सिधि नव निधि करत निहीरौ॥  
हरिन कसिब बधकरि अधपति देई।  
इन्द्रकों विभौ प्रहलाद न लेई।  
देव दानवं जाहि संपदा करि मानै।  
गोविंद सेवग ताहि आपदा करि जानै॥

(घ) साहिब से लागी री सजनी।  
 मेरो ब्याह भयो बिन मँगनी॥  
 लागि गई तब लाज कहाँ की।  
 कल न परै दिन रजनी॥  
 ना नैहर ना सासुर की मैं।  
 सहज लगी कछु लगनी॥  
 जब हम रहे पिया तब नाहीं।  
 बूझो बात बैरगनी॥

(ङ) कँवल से भँवरा बिछुड़ल हो,  
 जहँ कोइ न हमार।  
 भौंजल नदिया भयावन, हो बिन जल कै धार॥  
 ना देखूँ नाव न बेड़ा हो, कैसे उतरब पार।  
 सत्त की नैया सिपविल हो, सुकिरत करि धार॥  
 गुरु के सबद की नहरिया हो, खेइ उतरब पार।  
 दास कबीर निरगुन गावल हो, संत लेहु विचार॥

---